❁ 25 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] यह पुरूषोत्तम संगमयुग कोई भी शास्त्र में है नहीं। इस युग को अभी तुम बच्चे ही जानते हो, जबकि तुम सितारे फिर देवता बनते हो। तुमको ही कहेंगे नक्षत्र देवताए नमः। अभी तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। वहाँ तुम पूज्य बन जाते हो, यह भी समझने का है ना। इसको रूहानी पढ़ाई कहा जाता है।

2] तुम बच्चे भी जानते हो पढ़ाने वाला इनकारपोरियल शिवबाबा है। उनको अपना शरीर नहीं है। कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ। भगीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत-बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं तो भागीरथ ठहरा ना। तो सबका अर्थ समझना चाहिए ना। यह है सबसे बड़ी पढ़ाई।

3] आत्मा कहाँ रहती है? कहेंगे हम अपने घर परमधाम में रहने वाले हैं फिर हम यहाँ आते हैं बेहद का पार्ट बजाने। बाप तो सदैव वहाँ ही रहते हैं। वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। अभी तुमको रचता बाप, अपना और रचता का सार सुनाते हैं।

4] ब्राह्मण जीवन की विशेषता है प्योरिटी की रॉयल्टी। जैसे रॉयल फैमिली वालों के चेहरे और चलन से मालूम पड़ता है कि यह कोई रॉयल कुल का है, ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख प्योरिटी की झलक से होती है।

✺ योग-

1] आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? उसके लिए याद की यात्रा है। इसको कहा जाता है युद्ध का मैदान।

2] तुम बाप को याद करते रहो तो आत्मा एकदम पवित्र हो जायेगी। सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनिया के मालिक बन जायेंगे। कितना बार तुम सतोप्रधान से फिर सतोप्रधान बने हो ! यह चक्र फिरता रहता है। इसका कब अन्त नहीं आता।

✺ धारणा-

1] अब बाप कहते हैं एक तो अपने को आत्मा समझो। मूल बात ही यह है। भगवानुवाच– मनमनाभव।

2] तुम हरेक इन्डिपेन्डेन्ट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब हरेक जितना चाहे उतना पुरूषार्थ करे। पुरूषार्थ करना तो स्टूडेन्ट का काम है।

3] बाप के बच्चे बने तो विश्व के मालिक बन गये। फिर विश्व में है बादशाही। उनमें ऊंच पद पाना– यह है पुरूषार्थ करना।

4] प्योरिटी की झलक चलन और चेहरे से तब दिखाई देगी जब संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं लेकिन किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो तब कहेंगे विशेषता सम्पन्न ब्राह्मण आत्मा।

✺ सेवा-

1] कहाँ भी जाओ, एक-दो को सावधान करते रहो– मनमनाभव। शिवबाबा याद है? एक-दो को यही इशारा देना है।